अेक बूँद आंसू रो तरपण

(राजस्थानी भाषा की काव्य-रचना)

सत्य दीप



प्रकाशक

नवयुग ग्रन्थ कुटीर

कोट गेट, बीकानेर

सुनील सकसेना
एम. ए. (अंग्रेजी साहित्य)
प्रकाशक
नवयुग ग्रन्थ कुटीर
कोट गेट, बीकानेर

प्रथम संस्करण
1985

मूल्य 35.00

नीरज सकसेना
एम. ए. (अंग्रेजी साहित्य)
मुद्रक
गणराज्य प्रिन्टिग प्रेस
कोट गेट, बीकानेर

EK BOOND ANSU RO TARPAN (POETRY), WRITTEN BY SATYA DEEP, PUBLISHED BY NAVYUGA GRANTHA KUTEER, KOTE GATE, BIKANER (RAJASTHAN) INDIA, PRICE, RS. THIRTY FIVE ONLY, FIRT EDITION 1985. COPYRIGHT WITH PUBLISHER.

समर्पण

घणै मान

भाई जी श्री श्याम महर्षि

नैं

जिणा रै दिखायोड़ै रस्तै

चालण सारू पैंडो शुरू कर्‌यो ।

आमी-सामी दो बात

•

"एक बूंद ओसू रो तरपण" पैली काव्य रचना आपरैं सामी राखतां थकां घणो हरख हुय रैयो है। महाभारत रैं सगळा पातां री न्यारी-न्यारी निजू विशेषतावां रैयी है, पण अेक पात पतो नीं क्यूं दबाईजतो रैयो? सगळा इन्याव वो आंख सूं देख्या, पण उणनैं चुप रैवणो पड़्यो। जद इण रचना नैं सिरजणो शुरू करयो तो ओ'ई जी में रैयो कै करण रैं अंतस रो अमूजो आं आखरां में नीं हुयसी तो किण में हुयसी?

मां री गलती बेटा भुगतैं—
आ' उलटी रीत समाजां री।
हक जद-जद बेटो मांगे—
क्यूं बंद कड़ी दरवाजां री?

आ'ई मूल भावना इण रचना री सिरजणा लारैं रैयी, इण में कित्ती सफल रैयो आ'तो आप ई आंक सकों—मैं नीं।

इंण रचना री सिरजणा में जाण्या-अणजाण्या जित्ता ई साथ्यां रो सैंयोग रैयो, वां रो म्हैं अंतस सूं करजाळू हूं, विशेष तौर सूं भाई चेतन स्वामी, मदन सैनी, मालचंद तिवाड़ी, बजरंग शर्मा, अ'र सिगळी दीप-शिखा परिवार रो सैंयोग अर प्रेरणा भूलण जोग नीं है।

इणी साथै
सत्य दीप

अेक
बूँद
आँसू
का
तर्पण

१.

जद जोबन-भार सम्ह्यो कोनी
मंतर रो गाभो ओढ़ परो—
कुंता बुलाय लियो सूरज नैं
आवो थे म्हासूं मोद करो।

२.

सूरज भी टाळ सक्यो कोनी
जोबन री जबर बुलावण नैं
वो आ पूग्यो तुरतां-फुरतां
कुंती संग मोद मनावण नैं।

3.

वै काम-कळा में हुय आंधा
डूब्या रैया कंठां तांई
जद ज्वार ढळ्यो कुंता चेती,
सूरज न्हाट्यो ले अंगड़ाई।

४.

पण लोक रीत नैं तोड़ परो
वो काम अेक अवढ़ो करग्यो,
कै प्रीत-पग्योड़ो मद-गैलो
कुंता री कोख 'करण' धरग्यो।

५.

चिन्ता री चित्ता चढ़ कुन्ती,
सिगळी सिलगै, पण कूख बदै
जैड़ो औ काम हुयो म्हासूं–
कोई ना कीज्यो और कदै।

६.

चिन्त्या करनैं बापू बोल्या–
'तू जग में कीकी लागैली
कुन्तो औ काम कर्‌यो का'ली
बिन व्यायां बेटो जामैली।'

७.

पण, राज-तेज रो ले स्सारो,
राजा दबवादी सिगळी वात
उतर्‌यो जद धरती 'सूर-तेज'
नाकै कर दिन्यो रात्यू-रात ।

८.

इतियासां बात लुकी न लुकै—
श्री वात कथीजै का'णी में—
लोक-लाज ममता-मारी,
मां 'जिलफ' बगायो पाणी में ।

९.

मां री गळती बेटा भुगतै,
श्रा' उल्टी रीत समाजां री
जद-जद हक बेटा मांगै,
क्यूं बंद कड़ी दरवाजां री।

10.

बैंतां देख्यो जद पाणी में
नान्हो-सो जीव जबर रोतो
तद कौरव-सारथि चिमक पड़्यो
हो पाणी सूं मुंहडो धोतो।

११.

बो, ले पाणी सूं पसवाड़ै
उणनें हियै लगायो हो
खुद रो ईज लोही जाण लियो,
नीं जाण्यो कदै परायो हो।

१२.

मां ओेक इन्नें देखो कुन्ती
लोही नें परै बगा दीन्हो
पण, ममता-मूरत मां राधा,
तद दूध पाय मोटो कीन्हो।

१३.

मां अेक कर्म सूं बंधियोड़ी
सुत समदर-छाती धर दीन्यो
मां अेक धर्म सूं बंधियोड़ी–
सुत अमर जगत में कर दीन्यो।

१४.

बो करण, ज्यूं जोड़ै रो पा'णी
खा-खा फटकारां जाय नितर
रिंध रोही रो बधतो खेजड़
खा तेज ताव पाणी पत्थर।

१५.

काचो कूंपळ वध विरछ बणै
अर दिन-दिन-दूणो वधतो जा
रयूं छोटा पग, मोटा गाता–
वो, टंस-निसरणी चढ़तो जा।

१६.

पण हिवड़ै, हुमकै हूक जबर
तू किण विध जग में आयो है,
ममता तक मिली उधार तन्नैं–
तूं नीं राधा रो जायो है।

१७.

हिवड़ै सूं दरद उमड़ पड़तो,
जद कद श्रेकलपो वो होतो,
भीतर सूं बळतो काळजियो,
सिगळां सू श्रोलै बो रोतो।

१८.

सूरज रो तेज बध्यो जावै,
पकड़्यां राधा री आंगळियां,
इण ममता रो छैड़ो कांई,
जिण छियां करी बण बादळियां।

१९.

खेलण में आगीवाण रह्यो,
सरदारां नाम धर्या करता,
बचपन पळर्यो ज्यूं तावड़ियो,
छोरा संग खेलण सूं डरता ।

२०.

उमर जद खेलण री बीती
तद चोखी सीख सिखावण नै
बापू बेटै नैं ले आया
राजा रा मै'ल दिखावण नैं

२१.

मैं'ल जोय नैं हरख्यो करणो,
ग्रंतस में सूरज-सो ऊग्यो,
क' भटक्योड़ो, पू'न चढ़्योड़ो,
सही ठिकाणैं ग्रा–पूग्यो ।

२२.

जाणणिया ग्रणजाण बणया,
ममता सूं ग्रांख भरी कोनी,
चैरो देख'र पण चुप रैया,
कोई पिछाण करी कोनी ।

२३.

पंछी भी टावरिया पोखँ,
चांचां में चुग्गो न्हाक-न्हाक,
पण म्हैं निरभागी नैं सै भूल्या,
करणो कै श्रा वात सांच।

२४.

दरवार भर्‌यै में जद पूग्यो,
भीषम हीरै रो गुण श्रांक्यो,
सुविधावां सगली दे दीन्ही,
नैं राजपुत्रां साथै राख्यो।

२५.

सीखरा में पाछ नहीं राखी,
विद्यावां सै करणों पढ़ग्यो,
अरजन रै बरछ्यां-सी गडगी,
जद करणें रो रुतबो बढग्यो।

२६.

जद राज-सभा में 'परख' हुई,
सैगां सूं करण रह्यो आगै,
रीसां बळतो बोल्यो अरजन,
नीं जूझूं नीच जात सागै।

२७.

तड़क माथै में बळ पड़ग्यो,
हिवड़ै में दरद उमड़ आयो
जद काम-करण में म्हैं आगै,
तद 'जात-रोड़ो' क्यूं अटकायो।

२८.

पसवाड़ै जाय'र बैठ गयो,
कर नीची ढूंण युवक भोळो,
बस नख सूं धरती नै कुचरै,
हो निरादृत चैरो धोळो।

२९.

सुयोधन हाथ पकड़ बोल्यो,
उठ, हिवड़े-नेड़ो आजा तूं,
मत कर संताप ओछैपण रो,
बण अंग देस रो राजा तूं।

30.

हेटै उतर्‌यो सिंघासण सूं,
हाथां सूं मुकुट पैरायो हो,
सुयोधन बांथ भरी अैड़ी,
भाई, ज्यूं मां रो जायो हो।

३१.

धृतराष्ट्र राख्यो भेद नहीं,
पाळ्या बरोबर दोन्यां नैं,
सौ सिरखा पांचा नैं समझ्या;
पण, पत राखी कोई ना वै।

३२.

पांडू ई अंटियोड़ा रैता,
कौरव नैं देख काढ़ता कूंट,
बिना वात पड़ता बाथ्यां,
बाळ्या घर, आ'घर री फूट।

33.

नित राख्या करता राड़ करी;
नीं राख्यो आपस में अेको,
भाई भायां पर टूट पड़्या,
म्हाभारत राड़ मची देखो।

३४.

जायो कुण पाळ्यो कोई,
मनैं चाये थे कीं कैल्यो,
हूं तो इंण में संतोप करूं,
धाभो पटक्यो धरती भेल्यो।

३५.

हूं भी तो कुन्ती जायो हूं,
क्यूं उणा म्हनें छिटकायो है,
मां री ममता क्यूं-फांट पड़ी,
नीं कह्यो-"इन्नें म्हैं जायो है।"

३६.

वै सिद्ध पुरुष बाजै अकरा,
के सरम बांरै मुंहडै मांही,
इकडंकियो बजावै आभै तक,
पण अेक बात बोलै नांही।

37.

हूं गुणी घणो इण कानां में,
थें रतन घणा दियां कोनी,
पण, जिण लाज रै भय सूं थें,
मनोहर म्हनै संयं कोनी।

38.

थें देणो म्हनै गळगोस समझ,
नैणां सूं परै वगा दीन्यो,
पण मां री जियां भूतूं ममता,
थें हिवड़ै म्हनै लगा लीन्यो।

३९.

म्है दानी दिन उगावूं हूं,
नित-रोज सवा मरण सोनैं सूं,
परण बिलखूं ममता रै ताईं,
हिरणी बिडरायै छौनैं ज्यूं।

४०.

हो जोर थोड़ो, गुस्सो ज्यादा
पांडू किस्या बळशाली हा
नीची नाड़ कर्यां बैठ्या
जद हार गया 'पंचाली' हा

४१.

ह्हैतो जै आ म्हारै घर सूं,
म्हें बात कहूं हूं थांनै सांच,
हूं मर-मिट जातो उंण खातर,
पण रतो न आतो उंण पर आंच ।

४२.

इतियास उणां लिखिया देखो,
म्हनैं लागै आ' खारी बात,
बेचै हाथां सूं इज्जत नैं,
जद, वीर पैरले चूड़्यां हाथ, ।

४३.

अभिमन्यु कौरव मार्‌यो हो,
आ' खारी बांनें लागो बात,
भीसम री मौत कियां हुई,
आ छिपी पड़ी है किण मूं बात ?

४४.

जद रण सूं पार पड़ी कोनी,
द्रुपदा ले गई भेद री बात,
हिजड़े री ओट लेय वीरां,
कर दीनी भीसम री घात।

४५.

जद राज रैयो हो वांरो तद,
इतिहासां बात लुका लीन्ही,
पाण्डव दळ रै कुलछित करमां री,
बात कँवै कुण अणचीन्ही ?

४६.

ढकल्यो दोलड़ै गाभा सूं,
पण तर्क करण रो नाचैलो,
खुल ज्यासी खिड़क्यां अंतस री,
जद आ' पानां नें बांचैलो ।

४७.

जद जुद्ध में जाय द्रोण भिड़ग्यो,
पांडू-दळ छाग्यी मुरदानो,
वीर काट, पाटो धरतो,
हाथां सूं निसर गयो पाणी ।

४८.

जोधो बो जूझ्यो हो इसड़ो,
पाण्डू सै हुयग्या चितबैंगा,
लुंकण नै ठोड़ नहीं ल्हादी,
प्रांणां रा मोल हुया मैंगा ।

४९.

हो वीर पुरुष गुरु द्रोण इस्यो,
जद भरये मैदानां लड़तो हो,
स्यापो-सो कर देतो दसड़ो,
ज्यूं सिंघ भेड़ां में वड़तो हो।

५०.

सत-जुद्ध सूं पार पड़ी कोनी तद,
पांडू बिचारी मन में खोट,
झूठ बोलग्यो धरमराज,
हाथी री लीन्ही वीर ओट।

५१.

जद अश्वथामा री मौत सुणी,
गोडां री सित्या टूट गई–,
सौ डील मेल दियो सैकारो,
जोणं री आसा टूट गई।

५२.

पण छोड़ी नी जुध-भूमि बो,
जुध करणं तांईं डट्यो रैयो,
ल्हासां-हो-ल्हासां कर नाखी–,
धरती भी भार नहीं सैयो।

५3.

आखर कद तांई देवै साथ,
जद धनुष हाथ सूं छूट गयो,
आंधी-सो छाई अम्बर में,
वजतो इकतारो टूट गयो।

५४.

वो वीर खूटग्यो वीरां ज्यूं,
नीं मौत द्रोण री दुखदाई,
कर घात गुरू नैं बै मार्‌यो,
पण बांनैं लाज नहीं आई।

५५.

चेलां री देखो चतराई,
गुरु मार गंगा–सा न्हा लीन्या,
पण वांरो जमानो श्रकरो हो,
पानां इतिहास लुका लीन्या ।

५६.

करणों डंकं री चोट कैवै,
कुण तकं म्हारलो काटै लो,
हिवड़ै में दरद उठै इतरो–
कुंण श्राय साथ में बांटै लो

५७.

महाभारत जंग जम्यो कोनी
सै वीर मार दिया घोखै सूं,
किरसण सूं बुद्धि ले पाण्डू
आ डांग फाड़ दी डोकै सूं ।

५८.

सूंप्यो हो राज सम्हाळण नै,
मांग्यो तद ग्रांख्यां तण बैठी,
ज्यूं छा मांगण नै आयोड़ी,
आ के घरआळी बण बैठी ।

५९.

वै राज ताईं आंधा हुयग्या,
जुध-बिन तद कोई चारो नी,
कौरू –पाण्डू में फरक कितो ?
लोही सूं लोही न्यारो नी ?

६०.

पण खून होठां सूं लाग्योड़ो,
पांडू तो पाछ नहीं राखी,
पाछो जद मांग्यो राज जणां,
म्हाभारत राड़ मचा नाखी ।

६१.

सै वीर मार दिया धोखै सूं,
कर ल्हास, राज मूं के लेसी ?
करणै नैं लागी आ' चिंत्या—
आंधै नैं खांधो कुण देसी ?

६२.

जर-जमीन अर जोरू नैं,
जद पाण्डू हारी जूवै में,
पावण नैं राड़ मचा नाखी,
आदर्श न्हाक के कुवै में।

६३.

छिपी हुई है किण सूं बात,
'जूवै' रो नाम सदा धोखो,
पाण्डू के पाछा कर देता,
जद जीतण रो मिलतो मौको ?

६४.

हो काम गळत दुस्सासन रो,
बीरां उणनैं क्यूं सैण कियो ?
द्रुपदा नै लाज नहीं आई,
जद 'कुरु' नै कड़वो बैंण कैयो ।

९५.

कुंती नैं लाज नहीं आई–
'आंधा आंधै नैं जायो है'
वो द्रुपदा रो हो वड़ो जेठ
अर अभिमन्यु रो तायो है।

९६.

ओ ईज दुख अंतस में गैरो,
जिण सूं तड़फ्यो सिगळी रातां,
म्हाभारत राड़ नैं जलम दियो,
बस, द्रुपदा री कड़वी वातां।

६७.

किण नें क्यूं वात कँवै दौरी,
श्रो ध्यान राखता पैलां वै,
भाटो नीं कदै मार्यो जावै,
बैठ काच रै मैला में ।

६८.

चिमक पड़्यो सुयोधन जद,
समझ काच, पाणी-नाळो,
गळगट्टी खाय पड़्यो इसड़ो,
लोही रो वैय गयो वाळो ।

६९.

द्रुपदा रो सुण्यो चूंठियो जद,
पाण्डू मुळक्या मन-ई-मन में,
बंरछी ज्यूं मुळको जाय खुभ्यो,
सुयोधन रैं अंतस-मन में।

७०.

म्हाभारत इण पै ठण बैठ्यो,
लाही लोही री पाटण नैं,
पाण्डू वाही खेती हंस के,
पाछा क्यूं सिरकै काटण नै ?

७१.

धन-धरती री भूख-वश,
बूढ़ां पै बाण उठा लीन्या,
कुल-घाती बण नैं पाण्डू सै,
धरती सूं वीर उठा लीन्या ।

७२.

पंण, वां'रा इतिहास पानां,
वां'रा ई सै गुण गावै,
बडका मारयां पाप कित्तो,
ईंण नैं कूंत किसो पावै ।

७3.

जद द्रोण खूट्या जुध-भूमि में,
सुयोधन री कांपी छाती,
चैं'रो हुयग्यो इसड़ो धोळो,
ज्यूं तेल मूक्यां धुकज्या वाती ।

७४.

मंझधार खड़्यै कौरव-दळ री,
पतवार कूद नैं साम्है कुण,
रण-ज्वाला में जूझण सारू,
बीड़ो हाथां में थाम्है कुण ?

७५.

सुयोधन थारो साथी म्हैं,
मत दूजैं री तू आसा तक,
साखी रैसी 'सूरज' म्हारो,
लड़सूं छेवटली सासां तक।

७६.

खड़क्या तासा, फड़क्या बाजू,
चैरो हुयग्यो लोही-झरणो,
मदमातो शेर-समर घुसज्या,
यूं जुध में जाय भिड़्यो करणो।

७७.

तेग, तीर, भाला चाल्या,
आभै में आंधी-सी आ'गी,
हुयग्यो किरसण भी धोळो धप्प,
अर, अरजन नें चिंता लागी ।

७८.

कट-कट कटनैं पड़े हाथी,
गुड़ता छोड़ लिया हिणकारै,
म्हाभारत जुध रा दोय मजा,
भाई पर भाई असि मारै ।

७९.

हूंकार्‌यो शेर-सो जुध में जद,
भिड़्‌तो ई पल्ट नाखी बाजो,
अरजन रो मद तोड़-ताड़,
कर दी फोकी तीरंदाजी।

८०.

गिरज उडै, गादड़ कूकै,
भरै, पेट मर्‌या-मां-जायां सूं,
कट्यां पछै देखो मिलर्‌यो,
लोही भायां रो भायां सूं।

ा' रो पक्को रजपूती बो,
-तण नें खड़ग इसो मारै,
लड़तो-सो आगै भाजै,
छिटक पड़ै कटनैं लारै ।

८२.

तीरां सूं आभो ढक नाख्यो,
लोही री बाढ़ां-सी आई,
रण-चंडी छणक-छणक भाजै,
खप्पर लोही रा भरण-तांई ।

८३.

जुध री हालत देख परा,
मुरदानी पाण्डु-दळ छा गी,
जुभण में डर इसड़ो लागो,
ज्युं जरख चढ़ी डाकरा भागी।

८४.

पळकी खड़गां जद इन्नैं-उन्नैं,
हो माळो च्यानणों सूरज रो,
जुध में सै री आंख्यां चढ़ग्यो,
धन्न सूरपूत वो सूरज रो।

८५.

चुग-चुग जद मार्‌या महाबली,
धरती सूनो-सो कर दीन्ही,
पाण्डव-दळ माच्यो खरळाटो,
आ क्यूं हुय री है अणचीन्ही ?

८६.

इकडंकियै राज रै सुपनैं नैं,
भूठ करण कर देवै लो,
ल्यो, वीर हारग्या नौकर सूं,
इतियास नाम ओ' देवैलो ।

८७.

खतरो माथै जाण परो;
पूत मनावण कुंता चाली -
क्यूं आज खुलो आंख्यां थांरी,
पैलां कुण-कोई तन्नैं पाली ?

८८.

बां पूतां सिरखो पूत हो म्हैं,
आ गळती सिगळी थांरी हो,
जद-खून थारलो म्हैं असली,
हिवड़ै सूं क्यूं तूं न्यारी ही ?

८९.

मां बोली– "बेटा कीं कैलै,
बस ग्राज हियो थारै कोनी,
पण बात म्हारली मान इत्ती,
भाई, भायां नैं मारै नीं।"

९०.

जो लोक-लाज सूं ही भूल्यां,
बो कुंती ज्ञान सिखावै ही,
बेटो कह, अबढ़ो न्हाक परो,
खायोड़ो लूण बिकावै ही।

९१.

पण मिनख पणों उणरो असलो,
रजपूती आण ऊपर डटग्यो,
लड़स्यूं तो म्हे इणां साथै,
उण मां नें भी वो खट् नटग्यो ।

९२.

खुद थे तोड़्या बंधन म्हा सूं,
साथ कियां हूं जावूंलो ?
थे घाल्यो लूंण म्हनें जितरो,
हूं उंण रो मोल चुकावूंलो ।

९3.

पण बात अेक म्हैं कैवूं तन्नैं,
इंण नै सोळानां मान सांच,
अरजन खपै, कै म्हे मरग्यो,
पण, पूत रेवैला तेरै पांच ।

९४.

बस बांध हियो रैज्या काठी,
म्हाभारत जद मिट जावैलो,
दोन्या माय बच्यो बेटो,
घर लौट थारलै आवैलो ।

९५.

हो, मौत छिपी जिण बाणां में,
कुंता मांग्या वै पांच् बाण,
सा' लाज न्हाख दी कूवै में,
नीं दियो जरा हियै नैं ताण ।

९६.

जद कुंती रा बोल सुण्या,
दानी री परख घड़ी आई,
वेटै सूं 'पूत' बचावण नै,
वै पांच बाण वा' ठग ल्याई ।

९७.

वो वीर परख्यो धोखै नैं,
दे बाण मुळकियो मन-मन में,
ले मौत बिरी चाली कुंती,
पर दया नहीं निपजी मन में ।

९८.

मां री ममता में फांट पड़ी,
पण, करणों सोच कर्यो कोनी,
मौत सूंप वैरी-हाथां,
वो वीर चिन्हो-डर्यो कोनी ।

९९.

फेरूं ई जाय भिड़्यो रण में,
वो वीर लड़े हो वीरां ज्यूं,
लड़तो सूरज-ज्यूं लाल पड़ै,
त्यूं पड़ै उकळतै खोरां ज्यूं।

१००.

डगमग-डगमग डोली नैया,
पाण्डू सिगळा भरै उसांस,
पार 'करण' री पाणी अबढ़ो,
कुण आय'र बंधवावै आस ?

१०१.

खम ठोक लड़ै रण-भूमि में,
धरती माथै आ ज्या भूचाळ,
मदवै हाथी-ज्यूं लागै हो,
करणैं रो चैरो विकराळ।

१०२.

लड़तै घोड़ां री टापां सूं,
पूगी खंख अकासां ठेठ,
ल्हासां सूं धरती पट दीनी,
रण-चण्डी रा भरबां पेट।

१०३.

करणे रै मन श्रा' ही बस री,
बचनां लारै देणां प्राण,
ज्यूं उकळ्यो दूध उफाणा मारै,
त्यूं झूम-झूम के मारै बाण ।

१०४.

सीध-साध नैं मारै तीरियां,
चौफेरूं माचै सूं-साट,
चक्कर-घिन्नी चढ़ज्या चैरा,
सुणतां ही वां'रो सरणाट ।

१०५.

पाण्डू-दळ री करणै रै डर सूं,
हुय रैयो आ' हालत आज,
सांडा ज्यूं गेले नैं भूलैं,
पकड़ण नै जद उतरै बाज।

१०६.

अरजन रो मद तोड़ण खातर,
वार करै अेकै-सांस,
मार तोरिया मारग रोकै,
जद-जद किरसण मोड़ै रास।

१०७.

अवढ़ी मार पड़ी जद जुध में,
भीयें जी रा गोडा टिकग्या,
दो-वर धरती तोलणियें नें,
दिन धोळै ई तारा दिखग्या ।

१०८.

जै चावै तो मार सकै हो,
जुध में बली भीम नें आज,
पंण, कुंती नें वचन दियोड़ा,
करण राख ली उण री लाज ।

१०९.

मद तोड़ वळी भोयँ रो चाल्यो,
भर्यै मैदानां जुभण - जंग,
चक्काचूंध सैनां सा' हुयगी,
खुद किरसण भी हुयग्यो दंग।

११०.

ले आस अेक बढ़ र्यो आगै,
लागै अठै लड़तो अरजन,
और कीं सूं की लेणो नीं,
बस आंख तकै कठै अरजन ?

१११.

वस वाघावां नै टाळै हो
औरां सूं हो नीं की करणो,
मौत वाण में थाम परो,
ढूंढै हो अरजन नैं करणो ।

११२.

च्यारां नैं जिंदा राखण रा,
जद कुंती वचन भरा लीन्या,
रजपूती प्राण राखण ताईं,
तद प्राण-दान वां नैं दीन्या ।

११३.

फूली नास्यां, तणगी आंख्यां,
रोम-रोम ई बण्यो निसाण,
जंग मैं ध्यान अेक ही मन में,
कद मारूं अरजन रै बाण ?

११४.

चंतराई किरसण जद राखी,
लारै रथ, आगै हाथी,
ओटां तक-तक अरजन लड़र्‌यो
आवै नीं साम्हीं छाती।

११५.

लड़तो - लड़तो अरजन हांफ्यो,
हाल हुया सिगळा वे हाल,
रण - तासां सूं आभौ कांप्यो,
कंकाळी हुयगी विकराल।

११६.

कवच - कुंडल रो वीर धणी,
लड़तो किण नै धारै हो,
अजीत रैयो जुध में हरदम
करणैं नें कुण मारै हो?

११७.

लड़तो इस्यो चिमक नैं लड़तो,
सांसां नीं मा'तो सीनैं में,
पळका पळकातो तलवारां,
मोती लखवातो पसीनै नैं।

११८.

रथ तोड़ दियो, मद तोड़ दियो,
घायल अरजन नै कर दीन्यो,
सूरज ज्यूं अम्बर में चमक्यो,
करणों नाम अमर कीन्यो।

११९,

करण नैं मटियामेट करण,
पाण्डू-किरसण रळ छळ कीन्यो,
कवच - कुण्डल खोसण तांई,
इन्दर नैं बुलवा लीन्यो।

१२०.

इंदर नैं भी चिंत्या लागी,
काळ आयग्यो बेटै रो,
सुरग छोड़ इन्दर आयो,
जद सुण्यो बुलावो बेटै रो।

१२१.

धन्न, सूर-पूत वो सूरज रो,
जग में ऊंचो तेरो आसण,
टग-टग डग-धर इन्दर आयो,
छोड़ सुरग रो सिंघासण।

१२२.

भगवों भेख कर्‌यो इन्दर,
करणं री पोळ्यां जा पूग्यो,
धरती पर सुरग उतर आयो,
ओ' आज किन्नं सूरज ऊग्यो ?

१२३.

वा'मण वणियोड़ी देवराज,
दानी री मैं'मा जा - गाई,
बजर - दण्ड साम्हणियो झुकियो,
करणों लखग्यो चतराई ।

१२४.

करणों घणों हरख्यो मन मैं,
धन्न-धन्न म्हारा भाग आज,
म्हारी मौत खरीदण देखो,
करै याचना देव - राज ।

१२५.

दरवाजै देख्यो देव - राज,
हिवड़ै में हरख नहीं मायो,
सिगळा काम विचाळै छोड़्या,
साम्हां - पग दोड़्यां आयो ।

१२६.

मनवार करी, 'बोलो प्रभु'
मन में के बात बताओ थे,
जो हुकम हुवै, करद्यूं हाजर,
ल्याऊं, जो मंगवावो थे ।

१२७.

मांगो थे, तो धन दे दयूं,
दे दयूं दूधाळी गायां नें,
सिर - ताज धरूं म्हारो थां रै,
मारूं ठोकर सब माया रै ।

१२८.

'परणं' रो पक्को रजपूती म्हैं,
हाजर करूं, जो मन भावै,
थां री राखो लाज रैवै,
जाचक खाली ना जा पावै ।

१२९.

भेद भर्‌यो बोल्यो इन्दर,
ले राज, म्हनै है के करणो ?
विप्र बोल दै बात अेक,
जैं आज बचन देवै करणो ।

130.

बोल्यो करण नीं सोच करणो,
मन-मांग्यो चावो थे आच्छो,
सूरज - पूत थांनै कैवै,
नीं फिरूं बचन सूं म्हैं पाच्छो ।

१३१.

बोल्यो इन्दर, बेटा, मांगू,
नीं दौलत टैम बितावण नैं,
कुण्डल पूजा में दै थांरा,
दै कवच थारो विछावण नैं।

१३२.

देणो नीं चावै, नटज्या तू.,
कै हुयो वचन जो टळ ज्यासी,
मत सोच करी मन में करणा,
जाचक यूं ही मुड़ ज्यासी।

१33.

नीं कदै काळ सूं करण डरै,
पळकैं सूं फूस बळै कोनी,
क्यूं सोच करो थे देवराज,
वचनां सूं करण टळै कोनी ।

१3४.

मेरै मिटणैं मूं थे जोवो,
मंगता बण, मौत नैं ले ज्यावो,
टावर वां सिरखो म्हैं भी हूं,
न्याय कियां थे कर पावो ?

१३५.

खड़ग काढ झट तोड़ दिया,
कुण्डल दोनूं बो कानां सूं,
खरळाटा वैयग्या लोहो रा,
पण कवच उतार्यो वाना ज्यूं।

१३६.

इन्दर री आंख्यां मेह बरस्यो,
पाछी काया कंचन कर दी,
जुध में अेक वीर मारण,
हाथ 'अमोघ-शक्ति' धर दी।

१३७.

ले कवच-कुण्डल वो' चाल पड़्यो,
जूवै में हार्यै जुआरी ज्यूं,
डो'ल गयो, पण वचन रह्या,
करणों सोच करै हो क्यूं ?

१३८.

कौरवां नै सै भांडै है,
सुयोधन नैं दुर्योधन कै,
पण, मेरी मौत रा जाळ रच्या,
भरजन नैं दुरजन कुणसो कै ?

१३९.

लड़्यो इन्दर नैं दान देय,
जुध में मतवाळै जोधै ज्यूं,
बिन कुण्डळ इसड़ो लागै हो,
सींग टूट्योड़ै गोधै ज्यूं।

१४०.

वीर पुरुष इस्सो अकरो,
लख दाद है उंणरी छाती नैं,
मार इसी अवढ़ी मारी,
ज्यूं सिंघ, मारै हाथी नैं।

१४१.

धाप्योड़ो किरसण कर्यो वखाण,
चैंरो अरजन रो तण्यो,
पण, यादव - राज रै हिड़दै में,
करणे रो रुतबो वढ़्यो ।

१४२.

तेरै सिरखो वीर करण,
धरणी पै पैलो आयो है,
धन्न तू-तेरी जामणआळी,
के खाय तन्नैं वा जायो है ।

१४३.

लाग्या बाणां रा सरणाटा,
वीरां रा गोडा टिकग्या,
सारथि किरसण खुद हांफ गया,
रथ अरजन रा पाछा फिरग्या ।

१४४.

लड़तो-लड़तो वढ़ग्यो आगी,
रथ कादै में उण रो फंसग्यो,
सूरज नै लाग्यो गैण जियां,
चढ्यै ऊंट काळो डसग्यो ।

१४५.

धर हथियार ज्यूं ही उतर्‌यो,
रथ काढण नें धरती पै,
बस, उणीं टैम अरजन मार्‌यो,
खींच बाण, छाती पै।

१४६.

तड़फ, वीर धरती पसर्‌यो,
रथ में ई रैयग्यी रास धरी,
आज धरम रा ठेकैदारां,
देखो, धरम री ल्हास करी।

१४७.

सूरज रात-सी कर दीनो,
कुरुक्षेत्र में दिन धोळै,
स्यापो छाग्यो, आभो काळो,
गूंगा हुया सै कुण बोलै।

१४८.

टैम - निसरणी चढ़तो - चढ़तो,
खट्यो छेकड़लै गातां सूं,
रंण में आज खप्यो देखो,
भाई, भाई रै हाथां सूं।

१४९.

धरती पर पसर्यो जद करणो,
किरसण न्हाख्यो सिसकारो,
सै वीर मार दिया दे धोखो,
पण 'भाई' धोखै सूं क्यों मार्यो?

१५०.

अब धरती पर मांगणियां री,
ज्यान-जेवड़ी कुण थामैलो ?
हुयगी अनाथ आज धरती,
दानी इस्यो नहीं जामैलो ।

१५१.

म्है हाथां सूं काट्यो दरखत,
अ' बात आज तू अरजन सुण,
दानी खूट्यो इण धरती सूं,
बिन सोच्यां दान करैलो कुण?

१५२.

अरजन बोल्यो रीसां बळतो,
मत भूठी बात बणाओ थे,
दानवीर म्हैं जद मानूं लो,
आंख्यां सूं म्हनै दिखावो थे।

१५३.

रण, गाभा दोन्यूं छोड़्या,
भगवा भेख बणाया हा;
सूरज रो तेज कित्तो थकरो,
आ' परख करण नें आया हा।

१५४.

घायल करणीं जद टेर सुणी,
आंख्यां में पाणी भर आयो,
पण' आज म्हारलो क्यों टूटै,
अंत समय अवढ़ो आयो।

१५५.

पिच्छम-दिस रै मांय कियां,
हाय ! आज सूरज ऊगै,
म्हैं देद्यूं मुंहडै सूं दांत तोड़,
पण, हाथ कियां म्हारो पूगै ?

१५६.

अबढ़ै टैम री परख घड़ी,
मन में ही धोखो रैय जासी,
टैम छेवटली 'पण' टूट्यां,
सूरज रै काळख आ जासी।

१५७.

दिख्यो नीं कोई ओर जोर,
भाटै पर पटक्यो खट मुंहडो,
पण, जाचक नाड़ हिला दीनी,
ओ झूठो दान रवै भूंडो।

१५८.

धरती री छाती पै मार्‌यो बाण,
करणो दांतां नैं भींच परो,
सूरज डील लुका लीन्यो,
बादळ में आंख्यां मींच परो।

१५९

धरा फोड़ गंगा निकळी,
सोनो जूठो हो, धो नाख्यो,
नीं सोच कर्यो कीं तड़फण रो,
दुःख पायो पण, 'पण', राख्यो ।

१६०

आंख्यां किरसण री भर आई,
दुःखां सूं छाती नें भींचै हो,
करणो सूरज ज्यूं चमकै हो,
अरजन रो मुंहडो नीचै हो ।

१६१.

'पण' पाळ्या पछैं तूट्यो तारो,
तेज मिळ्यो जा सूरज में,
पळक बीजळी मेह बरस्यो,
यूं आयो रोणो सूरज नैं।

१६२.

मार करण फिरर्यौ देखो,
मद में ई, इतरातो अरजन,
घात मौत रै कारण सूं,
कांप रैया अवतार किरसण।

१६३.

मार करण देखो पाण्डू,
रण-खेमा हरख मनावै हा,
भाई - हाथ मरवा भाई,
किरसण खुद पिछतावै हा ।

१६४.

छेद तीरा सूं भाई मार्‌यो,
भाई नें खांध नहीं दीन्ही,
रगां रो लोही कर धोळो,
शाबासी कीकर लीन्ही ?

१९५.

सुयोधन छोड़्यो सं'कारो,
रोतां - रोतां आंख्यां सूजी,
मोभी - पूत री मौत सुणी,
मुंहडो लुका कुंती कूकी ।

१९६.

कुण हो पापी, कुण हो धरमी ?
चै'रां साम्हीं कुण ल्यावै दरपण,
छेवट किरसण करण नै दीन्यो,
अेक बूंद आंसू रो तरपण ।



सत्य दीप

आकाशवाणी एवं विविध पत्र-पत्रिकाओं में अनेकों बार प्रसारित प्रकाशित। 'एक बूंद आंसू री तरपण' प्रथम प्रकाशित कृति। 'थोर रा कांटा' कहानी संग्रह व 'मादा कबूतर' कविता-संग्रह प्रकाशनाधीन। सम्प्रति राज्य सेवा में कार्यरत।

अनेकों संस्थाओं से जुड़े हुए एवं मंचीय कवि।